मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2016 marumegh
ISSN:2456-2904

मक्का की स्वर्मिण खेती

[1]वर्षा शर्मा और [2]बिनीता देवी
[1]शोध छात्रा एवं [2]सहायक शिक्षीका
अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, उ.प.

मक्का भारत की एक महत्तवपूर्ण फसल है भारत के अधिकांश मैदानी भागो से लेकर 2700 मीटर की ऊचॉई वाले पहाडी क्षेत्रों तक मक्का सफलता पूर्वक उगाया जा सकता है इसे बलुई , दोमट मिट्टी मक्का की खेती के लिए अच्छी समझी जाती है। मक्का एक ऐसा खाद्यान्न है जो मोटे अनाज की श्रेणी में आता है परन्तु इसकी पैदावार पिछले दशक में महत्तपूर्ण फसल के रूप में मोड ले चुकी है आज जब गेंहू और धान में उपज बढाना कठिन होता जा रहा है मक्का पैदावार के नये मानक प्रस्तुत कर रही है जो इस समय बढ कर 5.98 तक पहुॅच चुका है।

मक्का कार्बोहाइड्रेट का बहुत अच्छा श्रोत है जो मनुष्य के साथ साथ पशुओ के आहार का प्रमुख अवयव भी है तथा औद्योगिक दृष्टि से इसका महत्तवपूर्ण स्थान भी है चपाती के रूप में भुट्टे सेककर मधुमक्का को उबाल कर कोर्न्फलैक्स पॉपकार्न आदि के रूप में किया जाता है इसके अलावा इसका उपयोग कार्ड आयल बायो्फयूल के लिए भी होने लगा है

औद्योगिक दृष्टि से मक्का में प्रोटीनेक्स ,चॉकलेट ,पेटंस ,शाही लोशन, स्टार्च ,कोकाकोला के लिए सीरप आदि बनाने में किया जाता है । बेबीकोर्न, मक्का से प्राप्त होने वाले बिना परागित भुट्टो को ही कहा जाता है बेबी कोर्न का पोष्टिक मूल्य अन्य सब्जियों से अधिक है।

मक्का के उत्पादन हेतु भौतिक कारक –

1– जलवायु एवं भूमि

मक्का उष्ण एवं आर्द्र जलवायु की फसल है इसके लिए ऐसी भूमि जहॉ पानी का निकास अच्छा हो उपयुक्त होती है।

2– खेत की तैयारी

खेत की तैयारी के लिए पहला पानी गिरने के बाद जून माह में हेरो करने के बाद पाटा लगा देना चाहिए व रबी मौसम में दो बार कल्टीवेटर व दो बार हेरो से जुताई करनी चाहिए। यदि गोबर की खाद का प्रयोग करना हो तो अन्तिम जुताई से पहले जमीन में मिला दें।

3– बुवाई का समय

क– खरीफ – जून से जुलाई

ख– रबी – अक्टूबर से नवम्बर तक

ग– जायद – फरवरी से मार्च तक

4– उन्नत किस्में

क्र. स.	संकर किस्म	अवधि (दिन में)	उत्पादन (कु./हे.)
1	गंगा – 5	100 से 105	50 से 80
2	डेक्कन – 101	105 से 115	60 से 65
3	गंगा सफेद – 2	105 से 110	50 से 55
4	गंगा – 11	100 से 105	60 से 70
5	डेक्कन – 103	110 से 115	60 से 65

From – www.krishisewa.com

5– कम्पोजिट जातिया

अंबर, जवाहर, किसान विक्रम, सोना, विजय, को – 1, रेणुका, कंचन, दियारा – 3, एन. एल. डी. ।

6– बीज की मात्रा व बीजोपचार

अच्छी पैदावार के लिए संकर किस्मो में 12 से 15 किलो/हे. व कम्पोजिट में 15 से 20 किलो/हे. की बुवाई की जाती है बीजो को बोने से पूर्व किसी फफूंद नाशक दवा से उपचार करें जैसे थायरम 2.5 – 3 ग्राम/किलो बीज की दर से उपचार करें व पी. एस. बी. कल्चर 5 – 10 ग्राम/किलो बीज की दर से उपचार करना चाहिए।

7– बुवाई

बुवाई वर्षा प्रारम्भ होने या सिंचाई का साधन उपलब्ध हो तो 10 से 15 दिन पूर्व करें अर्थात बुवाई के समय जमीन में पर्याप्त नमी हो बीज की गहराई 3 से 4 सेमी0 हो। व पक्ति से पक्ति की दूरी 60 से 75 सेमी. हो व पौधे से पौधे की दूरी 20 से 25 सेमी. रखी जानी चाहिए।

8– उर्वरको का प्रयोग एवं उपयुक्त उर्वरक संयोग (किग्रा./हे.)

क0स0	नत्रजन	फास्फोरस	पोटाश	संयोग–1	संयोग–2	संयोग–3
1	100–125	60	40	डीएपी–130.43 यूरिया–166.35 एमओपी–66.66	एसएसपी–375 यूरिया–217.39 एसओपी–80	टीएसपी–125 यूरिया–217.39 एमओपी–66.66

9– सिचांई

सर्वप्रथम अंकुरण के समय जमीन में पर्याप्त नमी हो इसमें सिचांई पुष्पन व दाना भरने के समय करनी चाहिए व जल निकासी की भी पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए।

10– निराई – गुड़ाई

वर्षा एवं ग्रीष्मकाल में फसल में खरपतवार हो जाती है जिसमें 2–3 गुढाई करके निकाल दें व साथ – साथ पौधो पे मिट्टी भी चढा दें ताकि पौधे हवा से गिरे ना।

11– कीट व रोग

क – तना छेदक कीट

इसके लिए कार्बोफ्यूरोन 3 जी 20 किग्रा. अथवा फोरेट 10 प्रतिशत सी जी 20 किग्रा. अथवा क्यूनालफॉस 25 प्रतिशत ई सी 1.50 ली. पानी में घोल कर दें।

ख – प्ररोह मक्खी

इसके लिए कार्बोफ्यूरान 3 जी 20 किग्रा. अथवा फोरेट 10 प्रतिशत सी जी 20 किग्रा. अथवा क्यूनालफॉस 25 प्रतिशत ई सी 1.50 ली. पानी में घोल कर दें।

रोग

क– मृदु रोमिल आसिता रोग

पत्तियों पर धारिया पड जाती है प्रभावित हिस्से सफेद रूई जेसे नजर आते है पौधो की बढवार रूक जाती है इसके उपचार के लिए डाइथेन एम–45 दवा पानी में घोलकर 3–4 छिडकांव करें।

ख – पत्तियों का झुलसा रोग

रोग में पत्तियों पर अण्डाकार भूरे रंग के धब्बे बनतें है रोग उग्र होने पर पत्तिया झुलस कर सूख जाती है इसके उपचार के लिए जिनेव 0.12 प्रतिशत का छिडकांव करें।

ग – तना सडन– तने की पोरियों पर जलीय धब्बे दिखाई देतें है जो शीध्र ही सडने लगतें है व दुर्गन्ध आती है पत्तिया पीली पड कर सूख जाती है इसके उपचार के लिए 150 ग्राम केप्टांन 100 ली. पानी में घोलकर जडो पर डालना चाहिए।

12– फसल की कटाई एवं गहाई

फसल अवधि पूर्ण होने पर 90 से 115 दिन बाद जब दानो में नमी 15 प्रतिशत हो तो कटाई करनी चाहिए।

गहाई का कार्य साधारण थ्रेसर में थोडा परिवर्तन करकें भी किया जा सकता है इसमें भूट्टे सूखने के बाद बिना छिलकें उतारे सीधा थ्रेसर में डाल दें । इसमें दाने का कटाव भी नही होता है एंव कडवी व भूसा जानवरो के खाने योग्य बन जाता है।

13– उपज एंव भण्डारण

क – उपज खरीफ में 45 से 55 कु./हे. एंव रबी में 75 से 80 कु./हे.।

ख – बीजो में 8 से 9 प्रातिशत नमी तक सुखाकर भण्डारित करें।